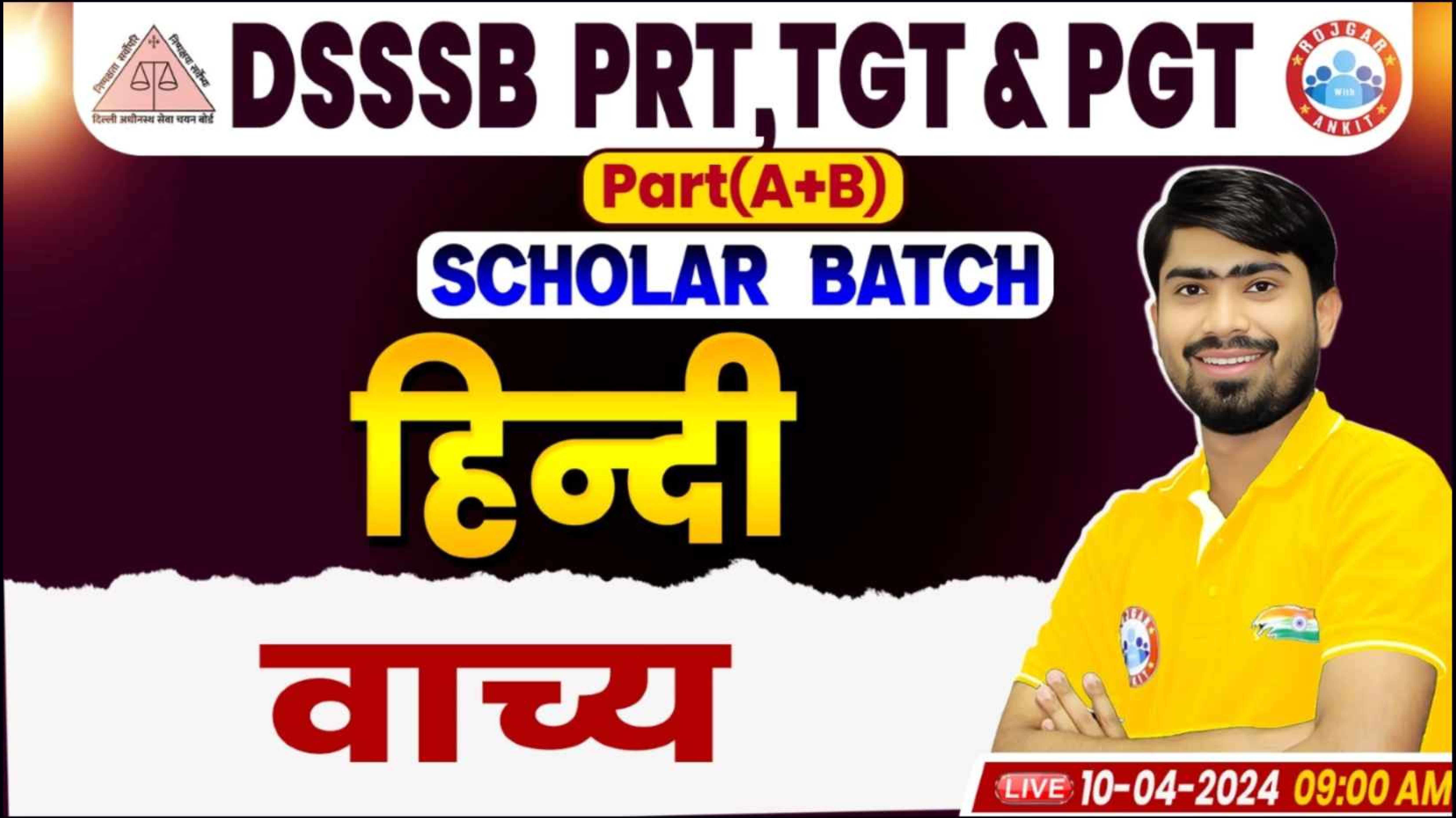
DSSSB PRT, TGT & PGT
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
ROJGAR With ANKIT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
वाच्य
LIVE 10-04-2024 09:00 AM

वाच्य

- कर्तृ
- कर्म
- भाव

परिभाषा ⇒ क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वाक्य में कर्ता, कर्म और भाव तीनों में से किसी एक की भी प्रधानता होती है। उसे वाच्य कहते हैं।

वाच्य तीन प्रकार के होते हैं-

(i)- कर्तृ वाच्य ⇒ क्रिया के जिस रूप से वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो उसे कर्तृ वाच्य कहते है।

वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का लिंग और वचन कर्ता के अनुसार

कर्तृ वाच्य में अकर्मक और सकर्मक दोनों क्रियाओं का प्रयोग होता है।

उदा॰ घोड़ा भागता है। अमन पत्र लिखता है।

लड़का रोता है।

राम दूध पीता है।

सीता गाती है।

नोट- कर्ता के साथ विभक्ति हो और कर्म के साथ विभक्ति न हो तब
अपवाद क्रिया कर्म के अनुसार होती है।

उदा० सीता ने अनार खाया। (सीता ने → कर्ता; अनार खाया → पुल्लिंग)

रमन ने अखबार पढ़ा। (अखबार पढ़ा → पुल्लिंग)

गीता ने चटनी खाई (चटनी खाई → स्त्रीलिंग)

अमन ने पुस्तक पढ़ी।

2- कर्मवाच्य ⇒ क्रिया के जिस रूप से वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध हो उसे कर्म वाच्य कहते हैं।

मुख्य क्रिया सदैव सकर्मक होती है। (से / द्वारा)

क्रिया का लिंग और वचन कर्म के अनुसार होता है।

उदा॰ आम खाया जाता है।
(आम → कर्म)

गीत गाया जाता है।

पुस्तक पढ़ी जाती है।

लेख लिखा गया।

मेरे द्वारा समाचार पत्र पढ़ा गया।

ओमप्रकाश द्वारा भोजन किया गया।

छात्रों द्वारा उपन्यास लिखे गए। बिल्ली के हाथों चूहा मारा गया।

(3)- भाव वाच्य ⇒ क्रिया के जिस रूप से वाक्य में भाव की प्रधानता का बोध हो उसे भाववाच्य कहते है।

नोट- कभी-कभी भाववाच्य का प्रयोग प्राय: असमर्थता दिखाने में होता है
क्रिया अकर्मक + एकवचन + अन्य पुरुष

उदा॰ मुझसे चला नही जाता।
राम से नहाया नही जाता।
धूप में चला नही जाता।
मुझसे शोर में नही रहा जाता।

सीता से हँसा नही जाता।
चलो अब सोया जाए।
अब चला जाए।
चलो घूमने चला जाए।
राम से तेज दौड़ा जाता।